

# डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 4, रहस्योद्घाटन 1

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन और रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर उनका पाठ्यक्रम है। यह रहस्योद्घाटन अध्याय एक पर सत्र 4 है।

अब जब हमने रहस्योद्घाटन को पढ़ने और व्याख्या करने के लिए ऐतिहासिक रूपरेखा और साहित्यिक रूपरेखा प्रदान की है, तो अब मैं जो करना चाहता हूँ वह पहले अध्याय से शुरू करते हुए, पुस्तक के माध्यम से काम करना शुरू करना है।

जिस तरह से हम इसे देखेंगे, और जिस पद्धति का हम अनुसरण करेंगे, वह दोहरी है। नंबर एक, मैं प्रत्येक अनुभाग को उसके संदर्भ में समग्र कार्य, दृष्टि के समग्र अर्थ, या जिस अनुभाग से हम निपट रहे हैं, उसके बारे में जानकारी देकर शुरू करना चाहता हूँ। और फिर दूसरा है, उसके प्रकाश में, कुछ विवरणों की जांच करना, हालांकि सभी नहीं, कुछ विस्तृत भाषा, दृष्टि, प्रतीकों की, उनकी पृष्ठभूमि और उनके अर्थ को देखते हुए और साथ ही वे कैसे कार्य करते हैं।

फिर, मैं हर एक विवरण पर गौर नहीं करना चाहता। मैं केवल वही दोहराना नहीं चाहता जो आप अन्य टिप्पणियों में पा सकते हैं, बल्कि मैं प्रत्येक अनुभाग में कुछ अधिक महत्वपूर्ण विवरणों की खोज और जांच में समय बिताना चाहता हूँ। तो हम अध्याय एक से शुरूआत करेंगे।

अध्याय एक को वास्तव में दो अलग-अलग खंडों में विभाजित किया जा सकता है, अध्याय एक और पहले आठ छंद, जिन्हें हम पहले ही देख चुके हैं। श्लोक चार से श्लोक आठ तक शुरू करते हुए, यह एक प्रकार का पत्री खंड है, एक पत्र के रूप में या एक पत्र के रूप में पुस्तक का परिचय, हालांकि इसका विस्तार किया गया है और इसमें आप पॉल के पत्रों में से एक में देखने के आदी हैं, उससे कहीं अधिक शामिल है। उदाहरण के लिए, उनके परिचय में। और फिर अध्याय एक, नौ से 20 तक, जो यीशु मसीह के उद्घाटन दर्शन के रूप में कार्य करता है।

तो, अध्याय एक, श्लोक एक से आठ तक पुस्तक की प्रकृति और चरित्र के परिचय के रूप में कार्य करता है। यह लगभग हमें बताता है कि इसे किस प्रकार पढ़ा जाना चाहिए और हमें इसे किस प्रकार अपनाना चाहिए। ऐसा लगता है कि यह हमें कुछ प्रमुख विचारों और कुछ प्रमुख विषयों से भी परिचित कराता है जिन्हें पुस्तक के बाकी हिस्सों में उठाया और विकसित किया जाएगा।

और फिर जैसा कि हमने कहा, अध्याय एक, नौ से 20 तक, अध्याय एक का शेष भाग मसीह का एक उद्घाटन दर्शन है जो अब जॉन को सात चर्चों में एक संदेश लाने के लिए नियुक्त करता है जो अध्याय दो और तीन में और विकसित होगा। दूसरी बात यह है कि दूसरे खंड में छंद नौ से 20 भी जॉन के रहस्योद्घाटन और संदेशों को वैधता या प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए कार्य

करता है जो वह अध्याय दो और तीन में चर्चों में लाने जा रहा है। मुझे यकीन नहीं है कि यह बिल्कुल भविष्यसूचक आह्वान है।

मुझे अध्याय एक में इस बात के बहुत से प्रमाण नहीं दिखे कि यह बिल्कुल भविष्यवाणी संबंधी कॉल कथाओं की तरह है जो आपको पुराने नियम के कुछ भविष्यसूचक साहित्य में मिलती है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से एक कमीशन है। जॉन को अब सात चर्चों को संबोधित करने के लिए नियुक्त किया जा रहा है और यह रहस्योद्घाटन की शेष पुस्तक के साथ-साथ अध्याय चार से 20 तक के लिए प्रमाणीकरण और वैधीकरण प्रदान करने का काम करता है। और यह जॉन के दृष्टिकोण को ऊंचे से कम किसी में भी आधार बनाकर करता है। पुनर्जीवित मसीह जो अब खुद को जॉन के सामने प्रकट करता है और उसे अध्याय दो और तीन में सात चर्चों में आधिकारिक संदेश लाने के लिए नियुक्त करता है।

अध्याय एक में, हम वास्तव में पाते हैं, और हम इन सभी को नहीं देखेंगे, लेकिन हम सबसे महत्वपूर्ण लोगों को उजागर करने का प्रयास करेंगे। अध्याय एक में, हम जॉन को भाषा और छवियों को एक साथ बुनते हुए पाते हैं, विशेष रूप से पुराने नियम से, विशेष रूप से डैनियल जैसे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं से। डैनियल अध्याय सात, जहां डैनियल के पास मनुष्य के पुत्र का एक दर्शन है, अध्याय एक में इस उद्घाटन दर्शन में यीशु मसीह के बारे में जॉन के दृष्टिकोण में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

और फिर, हम इनमें से कुछ को देखेंगे। तो, आइए उन दो अनुभागों को थोड़ा और विस्तार से देखें। अध्याय एक, छंद एक से आठ तक, पुस्तक के चरित्र का परिचय देता है, यह किस प्रकार की पुस्तक है, और इसे कैसे पढ़ा जाना चाहिए, कुछ प्रमुख विषयों का परिचय देता है जो शेष पुस्तक और प्रकार में विकसित होंगे रहस्योद्घाटन की शेष पुस्तक को पढ़ने के लिए रूपरेखा प्रदान करता है।

जैसा कि हमने पहले ही कहा है, रहस्योद्घाटन स्वयं की पहचान से शुरू होता है या जॉन इसे यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन या सर्वनाश के रूप में पहचानकर काम शुरू करता है। हम पहले ही कह चुके हैं, और इसलिए मैं इस पर अधिक समय बर्बाद नहीं करना चाहता। हम पहले ही कह चुके हैं कि इस बिंदु पर, शीर्षक सर्वनाश या शब्द सर्वनाश, या कि आपके अधिकांश अंग्रेजी अनुवाद इसका अनुवाद रहस्योद्घाटन के रूप में करेंगे, लेकिन शीर्षक या शब्द सर्वनाश अभी तक किसी प्रकार के साहित्य या साहित्यिक का शीर्षक नहीं था शैली।

हालाँकि, अपने काम को एक रहस्योद्घाटन के रूप में लेबल करके, जॉन हमसे यह अपेक्षा करता है कि हम इस पुस्तक को अन्य रहस्योद्घाटन ग्रंथों, अन्य ग्रंथों जो एक दिव्य रहस्योद्घाटन प्रदान करते हैं, और उसकी इच्छा, विशेष रूप से एक दृष्टि के रूप में, के संदर्भ में पढ़ें। इसलिए, हमें रहस्योद्घाटन की पुस्तक में, ईश्वर की इच्छा और ईश्वर के इरादे और अपने लोगों के लिए ईश्वर के वचन को उजागर करने वाला, खुलासा करने वाला, उस स्थिति की वास्तविक प्रकृति का खुलासा और खुलासा करने की उम्मीद करनी चाहिए जिसमें पाठक खुद को पाते हैं। यह दिलचस्प है कि हमें यह शब्द, रहस्योद्घाटन या इस पुस्तक का शीर्षक, यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन मिलता है।

अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों में ईसा मसीह के रहस्योद्घाटन का अनुवाद किया गया है, जो काफी अस्पष्ट है। अधिकांश टिप्पणियाँ इस बात पर बहस करती हैं कि क्या यह मसीह के बारे में एक रहस्योद्घाटन है? अर्थात्, जो प्रकट किया गया है उसकी सामग्री क्या यीशु मसीह है, या क्या यीशु मसीह वह है जो प्रकट कर रहा है? कुछ भी हो सकता था। और कुछ लोग जो दोनों को चुनने का निर्णय नहीं लेना चाहते और कहते हैं, ठीक है, यह दोनों यीशु मसीह के बारे में एक रहस्योद्घाटन है।

यीशु ही रहस्योद्घाटन की सामग्री है, लेकिन वह रहस्योद्घाटन का विषय भी है। वह खुलासा कर रहा है। हालाँकि, मेरी राय में, जब आप पाठ को ध्यान से पढ़ते हैं, तो फिर से श्लोक एक और दो को देखें, यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन, जो भगवान ने उसे अपने सेवकों को दिखाने के लिए दिया था, जो जल्द ही होने वाला है।

उसने अपने दूत को अपने नौकर जॉन के पास भेजकर यह बात बतायी। ध्यान दें कि रहस्योद्घाटन की इस प्रकार की श्रृंखला या संचार की श्रृंखला पहले ईश्वर से शुरू होती है, फिर यीशु मसीह से, फिर देवदूत से, सेवकों से, जॉन से। इसके आलोक में, मुझे लगता है कि हमें इसे इस रूप में लेना चाहिए कि यीशु मसीह ही वह व्यक्ति हैं जो प्रकटीकरण कर रहे हैं।

वह विषय है, सामग्री नहीं। हालाँकि मैं यह नहीं कहना चाहूँगा कि यह सच नहीं है, विशेषकर अध्याय एक में, यीशु वास्तव में वही है जो प्रकट हुआ है। लेकिन जब आप प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब पढ़ते हैं, तो यह मसीह के व्यक्तित्व से कहीं अधिक प्रकट करती है।

फैसले की तस्वीरें हैं। मुक्ति के चित्र हैं। रहस्योद्घाटन से रोमन साम्राज्य की वास्तविक प्रकृति का पता चलता है, वगैरह-वगैरह।

इसलिए, ध्यान यीशु पर उतना नहीं है जितना रहस्योद्घाटन की सामग्री पर है, जो प्रकट हुआ है, हालाँकि यह सच है। लेकिन एक श्लोक में, यीशु मसीह का यह रहस्योद्घाटन, मुझे लगता है कि इसे यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन समझा जाना चाहिए। यह वह रहस्योद्घाटन है जो यीशु मसीह स्वयं देते हैं।

यीशु इस रहस्योद्घाटन का एजेंट है जो अब जॉन को दिया गया है। इस परिचय की दूसरी विशेषता, अध्याय एक, श्लोक एक से आठ तक, वाक्यांश, गवाही या यीशु मसीह की गवाही पर ध्यान दें। तो, जॉन कहते हैं, यह यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन है।

उसने अपने दूत, अपने सेवक, यूहन्ना को भेजकर इसकी सूचना दी, जिसने जो कुछ उसने देखा उसकी गवाही दी। वह परमेश्वर का वचन और यीशु मसीह की गवाही है। यहां, मुझे लगता है कि जोर स्वयं यीशु पर है जो पुस्तक की सामग्री की गवाही देता है।

यीशु, फिर से, पुस्तक को प्रामाणिकता और अधिकार प्रदान करता है, यीशु मसीह ही वह है जो उस सामग्री और जानकारी का गवाह है जो अब जॉन के सामने प्रकट हुई है। वास्तव में, यह

वाक्यांश प्रकाशितवाक्य की शेष पुस्तक के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा का परिचय देता है। वह शब्द है गवाह या गवाही।

और इस बिंदु पर यह समझना महत्वपूर्ण है, सबसे पहले, गवाह या गवाही शब्द को पढ़ना आकर्षक है, जो कि मुझे लगता है, अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों में मिलता है। मैंने कुछ अन्य भाषाओं में अन्य अनुवादों की जाँच नहीं की है, लेकिन यह ग्रीक शब्द, जिसका अनुवाद गवाह या गवाही के रूप में किया जाता है, वह शब्द है जिससे हमें अपना अंग्रेजी शब्द शहीद मिलता है। और इसलिए, जब हम रहस्योद्घाटन की पूरी किताब में एक शहीद के संदर्भ में गवाही या गवाह शब्द पाते हैं तो इसे पढ़ना आकर्षक लगता है।

अर्थात्, अधिकांश बार हम शहीद शब्द का उपयोग करते हैं, कम से कम ईसाई हलकों में, किसी ऐसे व्यक्ति के संदर्भ में जो अपने विश्वास के लिए मर गया है, कोई ऐसा व्यक्ति जिसे यीशु मसीह में अपने विश्वास के लिए मौत की सजा दी गई है। चर्च के इतिहास में इस बिंदु पर, और नए नियम के लेखन के दौरान, इस शब्द का अभी तक यह अर्थ नहीं है। इस शब्द का सीधा सा मतलब है किसी चीज़ की गवाही देना या गवाही देना।

लेकिन प्रकाशितवाक्य यह पहले ही स्पष्ट कर देता है कि किसी चीज़ की गवाही देने और गवाही देने से अक्सर गवाह की मृत्यु हो जाती है या गवाही देने वाले को पीड़ा होती है। बाद में, इसका मतलब यह हो गया कि जो उस गवाह के कारण या उसके सामने मर जाता है। लेकिन इस बिंदु पर, गवाह या गवाही शब्द का वह अर्थ नहीं है जो शहीद से हमारा तात्पर्य है।

हालाँकि, मैं फिर से यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि जॉन इस बात से आश्चर्य है कि यीशु जो गवाही देता है, वह जॉन वही देता है जो उसने देखा था और ईसाइयों को रहस्योद्घाटन के दौरान जो देना चाहिए था, वह गवाही या गवाही यीशु मसीह के व्यक्तित्व के लिए अक्सर होती है। और अक्सर यह उम्मीद की जा सकती है कि इसके परिणामस्वरूप गवाह बनने वाले व्यक्ति को कष्ट और मृत्यु होगी। हमने देखा कि जॉन को एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पता है जो पहले ही मर चुका है, उसका गवाह, वफादार गवाह एंटिपस, जो स्पष्ट रूप से अपनी गवाही या अपनी गवाही के लिए मर चुका है। तो, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु की गवाही या गवाही है।

अब यूहन्ना जो लिखता है, यीशु उसकी गवाही दे रहा है। स्वयं जॉन और विशेष रूप से अन्य ईसाइयों को भी पूरी किताब में यीशु मसीह की सच्चाई और वास्तविकता का गवाह बनने या गवाही देने के लिए कहा गया है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर उनकी मृत्यु हो जाती है। अब, अध्याय एक में इस परिचयात्मक खंड के बारे में तीसरी बात, श्लोक एक से आठ तक, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, यह है कि जॉन भी स्पष्ट रूप से एक भविष्यवाणी के रूप में अपने काम की पहचान करता है।

और श्लोक तीन में, यहीं पर हम यूहन्ना को यह कहते हुए पाते हैं, धन्य है वह जो इस भविष्यवाणी के शब्दों को पढ़ता है, और धन्य हैं वे जो इसे सुनते हैं और जो लिखा गया है उसे हृदय में लेते हैं। यह दिलचस्प है कि जॉन इसे पढ़ने वाले और इसे सुनने वाले के बीच अंतर करता है। यह शायद

केवल उस तरीके को दर्शाता है जिस तरह से रहस्योद्घाटन को चर्चों तक संप्रेषित किया गया होगा।

किसी ने इसे पढ़ा होगा और बाकी लोगों ने इसे पढ़ते हुए सुना होगा, संभवतः एक ही सेटिंग में। लेकिन यहां जो दिलचस्प है वह यह है कि आशीर्वाद उस पर दिया जाता है जो इसे सुनता है और जो पढ़ा जाता है या जो सुना जाता है उसे दिल में रखता है। अर्थात्, एक भविष्यवाणी के रूप में रहस्योद्घाटन का स्पष्ट रूप से अर्थ गंभीरता से लिया जाना चाहिए और इसलिए इसका पालन किया जाना चाहिए।

तो फिर, रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से भविष्य की भविष्यवाणी करने के बारे में एक किताब नहीं है, लेकिन पहले से ही जॉन हमें बता रहा है कि जो इसे सुनता है और जो वास्तव में जॉन जो कहने जा रहा है उसका आज्ञापालन करके जवाब देता है, उसके लिए एक आशीर्वाद है। और फिर, इस स्थिति में, पहली सदी के पाठक जो बुतपरस्त रोमन शासन के साथ समझौता करने के लिए प्रलोभित हैं और शायद सम्राट के प्रति निष्ठा के लिए मसीह के प्रति अपनी निष्ठा और अनन्य निष्ठा से समझौता करते हैं, शायद उनमें से कुछ उत्पीड़न से बचने का प्रयास करते हैं यह सोचकर कि वे सम्राट की पूजा को यीशु मसीह की पूजा के साथ जोड़ सकते हैं। रहस्योद्घाटन एक ऐसी पुस्तक है जिसका उद्देश्य रखा जाना, अवलोकन करना और पालन करना है, न कि केवल यह जानकारी देने के लिए कि यह हमें भविष्य के बारे में बताती है।

चौथा, रहस्योद्घाटन भी, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, स्पष्ट रूप से एक पत्र है। अध्याय एक में, छंद चार से आठ तक, जॉन अपने काम को पहली सदी के एक विशिष्ट पत्र के प्रारूप का उपयोग करते हुए, पत्र-पत्रिका प्रारूप में संबोधित करता है। यद्यपि वह परिचय का विस्तार करने में अद्वितीय है, जॉन इसका उपयोग सात विशिष्ट चर्चों को संबोधित करने के लिए करता है।

तो, दूसरे शब्दों में, जॉन का मतलब है, रहस्योद्घाटन का मतलब एशिया माइनर या पश्चिमी एशिया माइनर या आधुनिक तुर्की में सात ऐतिहासिक चर्चों की विशिष्ट स्थितियों को संप्रेषित करना और संबोधित करना है, सात चर्च जिन्हें जॉन नाम देता है और मौजूदा चर्चों के रूप में पहचाना जा सकता है शाही रोमन शासन के केंद्र में। हालाँकि, दिलचस्प बात यह है कि इस परिचय के बारे में जो अनोखी बात है, वह यह है कि जॉन हमें यह भी बताता है कि वह चाहता है कि हम किताब के बाकी हिस्से को त्रिनेत्रीय शैली में पढ़ें। संदर्भों पर ध्यान दें, सबसे पहले, इस अभिवादन में, इस पत्री अभिवादन में, वह आपके लिए अनुग्रह और शांति की शुरुआत उससे करता है जो है और जो था और जो आने वाला है।

हम इसके बारे में थोड़ी देर में बात करेंगे। संप्रभु ईश्वर, परमपिता परमेश्वर का स्पष्ट संदर्भ जो सभी चीजों पर संप्रभु है। और फिर, और सात आत्माओं से।

संभवतः यहां संख्या सात को शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए जैसे कि सात अलग-अलग आत्माएं हैं, बल्कि सात को पूर्णता और पूर्णता और पूर्णता के प्रतीक के रूप में लिया जाना चाहिए। इसे परमेश्वर की आत्मा की परिपूर्णता के रूप में देखा जाता है। इसलिए, मुझे नहीं लगता

कि यह सात अलग-अलग आत्माओं का संदर्भ है, बल्कि स्वयं पवित्र आत्मा का संदर्भ है जो सिंहासन के सामने है।

और फिर पद पाँच, और यीशु मसीह की ओर से जो वफादार गवाह है। वहाँ फिर से वह शब्द है साक्षी, वफादार गवाह, मृतकों में से पहलौठा और पृथ्वी के राजाओं का शासक। इसलिए, शुरुआत में, जॉन ने हमें बताया कि वह चाहता है कि हम पुस्तक को त्रिनेत्रीय शैली में पढ़ें, कि ईश्वर, पिता, ईश्वर, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी इस पुस्तक में और रहस्योद्घाटन की प्रक्रिया में शामिल होंगे और मानवता और दुनिया के लिए भगवान के उद्देश्यों और इरादों को पूरा करने में।

श्लोक चार से आठ तक के इस पत्र परिचय की दूसरी विशेषता श्लोक चार में इसका उल्लेख है। ध्यान दें कि ईश्वर का वर्णन उस व्यक्ति के रूप में किया गया है जो था, आइए देखें, वह जो था और है और आने वाला है और उसके सिंहासन के सामने सात आत्माओं में से। यह शब्द सिंहासन पहले से ही एक महत्वपूर्ण विषय या अवधारणा का परिचय देता है जो न केवल रहस्योद्घाटन के बाकी हिस्सों में विकसित होता है, बल्कि इसे समझने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

अर्थात्, रहस्योद्घाटन इस मुद्दे और इस प्रश्न से निपटेगा कि वास्तव में नियंत्रण में कौन है? ब्रह्मांड पर वास्तव में संप्रभु कौन है? वास्तव में मानवता की नियति का नियंत्रण किसके पास है? विश्व और ब्रह्मांड के सभी मामलों पर वास्तव में संप्रभु शासक कौन है? और सिंहासन शब्द का उल्लेख पहले से ही रोमन साम्राज्य के दावों के साथ सीधे टकराव में रहस्योद्घाटन लाता है। यह सीज़र है जो सिंहासन पर बैठा है। और चीज़ों को देखने के रोमन तरीके के अनुसार, सीज़र अपने सिंहासन पर था।

सीज़र विश्व का संप्रभु शासक था। सीज़र मानवता की नियति का प्रभारी था। सीज़र वह था जिसने संप्रभुता का दावा किया और दिव्य होने का दावा किया।

और अब सिंहासन शब्द का उपयोग करके, मुझे यकीन है कि जॉन का शायद यही इरादा था, लेकिन इसे पढ़ने वाला कोई भी पहली सदी का पाठक समझ गया होगा कि यह सीज़र का सीधा प्रतिदावा था। यीशु मसीह के अलावा किसी और का सिंहासन महत्वपूर्ण नहीं है। मैं भी आश्चर्य हूँ, और हम शायद इसका उल्लेख अन्यत्र भी करेंगे।

एक आम समझ है कि जॉन ने जिस तरह से प्रतीकों और चित्रों में लिखा, उसका एक कारण जानकारी को गलत हाथों में जाने पर छिपाना था। यदि सीज़र ने इसे देखा होता या यदि किसी ने, कस्बों के स्थानीय अधिकारियों में से किसी ने, यह सब पढ़ा होता, तो वे प्रतीकवाद और छवियों से भ्रमित हो गए होते। तो, इसका मतलब एक तरह से अविश्वासी दुनिया से अपना संदेश छिपाना था, अगर उन्हें यह प्राप्त हो जाता।

हालाँकि, मुझे विश्वास है कि ऐसा नहीं है। मेरा मतलब है, मुझे नहीं लगता कि जॉन उनके लिए लिखने की कोशिश कर रहा है, लेकिन न ही वह कुछ छिपाने की कोशिश कर रहा है। मैं कल्पना नहीं कर सकता कि सात शहरों में से किसी एक में चर्च के बाहर, रोम का तो जिक्र ही नहीं, उन्होंने इसे उठाया होगा और पढ़ा होगा कि वहाँ एक सिंहासन है, उनके मन में तत्काल सवाल

उठा होगा कि, वहां एक और सिंहासन है लेकिन सीज़र का? तो, मैं इसे इस प्रकार समझता हूँ, एक अर्थ में, जॉन पहले से ही बहुत प्रति-शाही हो रहा है।

वह संप्रभुता और एक सिंहासन और शासकत्व का दावा कर रहा है जो इस दुनिया का नहीं है, जो सीज़र का नहीं है बल्कि पूरी तरह से ईश्वर और पवित्र आत्मा और मेमे, यीशु मसीह का है। इस तथ्य पर भी ध्यान दें कि यीशु स्वयं को पृथ्वी के राजाओं का शासक कहा जाता है। फिर, यह कुछ ऐसा होगा जिसे अधिकांश लोग सीज़र के साथ जोड़ेंगे।

और अब जॉन यीशु मसीह के लिए यह दावा कर रहा है। क्या आप पहले ही देख चुके हैं कि जॉन क्या कर रहा है? वह उस तरीके का परिचय दे रहा है जिस तरह वह चाहता है कि यह पुस्तक पढ़ी जाए। यह पाठकों की विशिष्ट स्थिति को संबोधित कर रहा है, लेकिन जॉन पहले से ही एक तरह से प्रति-शाही हो रहा है।

वह पहले से ही परिचय दे रहा है कि एकमात्र व्यक्ति जिसके पास सिंहासन का अधिकार है, एकमात्र व्यक्ति जिसके पास अधिकार के दावे का अधिकार है, एकमात्र व्यक्ति जिसके पास भगवान के लोगों की सच्ची पूजा का अधिकार है, और वह केवल भगवान है और मेमा, यीशु मसीह। श्लोक 5-8 में, श्लोक 5-8 में हम अधिक विशिष्ट रूप से पाते हैं कि मसीह और ईश्वर और पवित्र आत्मा ने लोगों के लिए क्या किया है। तो, पहली कविता, श्लोक 4 और 5 में भी सटीक रूप से परिचय दिया गया है कि वह कौन है जो जॉन के लिए रहस्योद्घाटन प्रदान कर रहा है, वह कौन है जो वास्तव में संप्रभु है।

अब श्लोक 5-8 आगे बढ़ते हैं और वर्णन करते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपने लोगों के लिए क्या किया है, पवित्र आत्मा ने क्या किया है, और यीशु मसीह ने सात चर्चों के लिए क्या किया है। श्लोक 5 के आधे भाग के बारे में ध्यान दें, जो हमसे प्रेम करता है और उसने हमें अपने लहू के द्वारा हमारे पापों से मुक्त किया है और हमें परमेश्वर और पिता के रूप में सेवा करने के लिए एक राज्य और पुजारी बनाया है, उसकी महिमा और शक्ति हमेशा और हमेशा बनी रहे। तथास्तु।

तो, सबसे पहले, इन दो श्लोकों, श्लोक 5 और 6 में, यीशु ने जो किया है उसका वर्णन उस भाषा में किया गया है जो निर्गमन कल्पना से भरी है। उसके खून से हमें छुड़ाने की इस भाषा पर ध्यान दें, जो याद दिलाती है कि भगवान ने अपने लोगों को छुड़ाने और उन्हें बंधन से मुक्त करने के लिए क्या किया था। अब ऐसा लगता है जैसे जॉन कहना चाहता है कि अब ईश्वर ने यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से एक नया पलायन हासिल कर लिया है, जिसने अब अपने लिए लोगों को छुड़ा लिया है। हमने रहस्योद्घाटन की व्याख्या के लिए पांच सिद्धांतों के बारे में बात की।

शायद हम एक और जोड़ सकते हैं। मैं एक भी नहीं जोड़ना चाहता था क्योंकि मैं छह नहीं जोड़ना चाहता था। आपके पास सात होने चाहिए।

मैं दूसरे के साथ नहीं आ सका। वैसे भी, एक और सिद्धांत जो जोड़ा जा सकता है वह प्रतीकवाद के सिद्धांत के अंतर्गत आता है, लेकिन पुराने नियम के साथ निरंतर बातचीत में, नए नियम को उसके संबंध में और प्रकाश में पढ़ना होगा। मेरी राय में, हमने पहले ही इस पर संकेत दिया है,

लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप पुराने नियम के ग्रंथों के साथ इसके निरंतर संबंध और निरंतर बातचीत को समझने के अलावा रहस्योद्घाटन को पूरी तरह से समझ सकते हैं।

और यहाँ उनमें से एक है। यह ओल्ड टेस्टामेंट एक्सोडस भाषा से परिपूर्ण है। लेकिन ध्यान दें, यह लगभग वैसा ही है जैसे जॉन एक कथा मान रहा हो।

न केवल इस्राएल को मिस्र से छुटकारा दिलाया गया और मुक्त किया गया, बल्कि निर्गमन की पुस्तक के अनुसार परमेश्वर ने उन्हें भी छुटकारा दिलाया और मुक्त किया। तो, निर्गमन के अध्याय 19 और श्लोक 6 में, ताकि वे परमेश्वर के लिए याजकों का राज्य बन सकें, जो बिल्कुल वैसा ही है जैसा आप यहां पाते हैं। जॉन निर्गमन की भाषा को दोहराते हैं और कहते हैं, भगवान ने हमें एक नए निर्गमन में मुक्त कर दिया है।

ईश्वर ने रोम से बाहर एक नए निर्गमन में अपने लोगों को मुक्त और मुक्त किया है। और अब उन्हें प्राचीन इस्राएलियों की तरह कार्य करना है, जो एक राज्य और एक पुजारी के रूप में कार्य करने के लिए थे ताकि परमेश्वर और पिता की सेवा की जा सके और उनकी महिमा और शक्ति हमेशा-हमेशा बनी रहे। तथास्तु।

दूसरे शब्दों में, इज़राइल के लिए भगवान का इरादा अब एक नए समुदाय में पूरा हो गया है। वह चर्च है, जो यहूदियों और अन्यजातियों से बना है। वापस जाएं और इफिसियों 2 को कभी-कभी पढ़ें, विशेषकर छंद 11 से 22 तक, ताकि कम से कम पॉल की इसके आधार की समझ को देखा जा सके।

तो अब, इस्राएल के लिए उन्हें छुड़ाने और पुजारियों का राज्य बनाने का परमेश्वर का इरादा अब हर जनजाति और भाषा और राष्ट्र के लोगों को रोमन साम्राज्य के उत्पीड़न से मुक्त करके पूरा हो गया है। अब भगवान के लिए एक राज्य और पुजारी बनना है, एक समुदाय जो अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व के आसपास केंद्रित है। इसलिए, यह पहले से ही दिलचस्प है कि जॉन पहले अध्याय में कल्पना करता है, जॉन एक ऐसे समुदाय की कल्पना करता है जो पहले से ही यीशु मसीह के व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करेगा जो पुजारियों के राज्य के रूप में भगवान और उसके राज्य का प्रतिनिधित्व करेगा।

जॉन पहले से ही पहचानता है कि मसीह लोगों का एक समुदाय बना रहा है जो पूरी पृथ्वी पर उसके शासन का प्रतिनिधित्व करेगा। संयोग से, पुराने नियम में आदम और हव्वा को बगीचे में क्या करना था और इज़राइल को क्या करना था और भगवान के मसीहा को क्या करना था, भगवान के राजा को क्या करना था। अब यीशु मसीह के माध्यम से, मानवता अंततः एक नए समुदाय को प्राप्त करती है जिसे मसीह बनाता है जो प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में एक प्रत्याशा और नई रचना की चौकी के रूप में उसके शासन और उसके राज्य का प्रतिनिधित्व करेगा।

ईश्वर पहले से ही उस समुदाय को अपना वफादार गवाह बनाने, अपने राज्य और पुजारी के रूप में कार्य करने के लिए बना रहा है। रहस्योद्घाटन का बाकी हिस्सा यह होगा कि यह कैसे काम करता है और चर्च को यह कैसे करना है। हालाँकि वे उसके राज्य और पुजारी होंगे।



यह दिलचस्प है कि रहस्योद्घाटन स्पष्ट करने जा रहा है, और आप इसे अध्याय 1 में पहले ही पा चुके हैं, लेकिन वे इसे पीड़ा के माध्यम से करेंगे और, लगभग विडंबना यह है कि वे एक राज्य और पुजारी होंगे। वे ईश्वर के शासन का प्रतिनिधित्व करेंगे, लेकिन वे ऐसा कष्ट और संघर्ष के माध्यम से करेंगे और उनमें से कुछ के लिए अंततः उनकी मृत्यु होगी। लेकिन ये शब्द इन सबके बीच पहले से ही सांत्वना प्रदान करते हैं।

मसीह पहले से ही लोगों का निर्माण कर रहा है। मसीह के पास पहले से ही पुजारियों का एक राज्य है जो दुनिया में उसके शासन और उसकी उपस्थिति के लिए भगवान के प्रतिनिधियों के रूप में कार्य करेगा। और फिर, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 हमें उसका चरमोत्कर्ष दिखाते हैं।

लेकिन पहले से ही भगवान का इरादा मानवता के लिए राज्य और पुजारियों का एक समुदाय बनाना है जो पीड़ा और संघर्ष के बीच भी उनके वफादार गवाह होंगे। परमेश्वर ने लोगों की रचना करके इसे पहले ही स्थापित कर दिया है। अब, पहले से ही, मैं मदद नहीं कर सकता, लेकिन सोचता हूँ कि जॉन का यही इरादा रहा होगा और उसके पाठकों ने इसे, फिर से, रोमन-विरोधी बयानबाजी के रूप में नहीं देखा होगा।

अर्थात्, परमेश्वर के लोग पहले से ही एक राज्य और एक पौरोहित्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। अर्थात्, वहाँ पहले से ही एक राज्य है जो रोम के राज्य और शासन को चुनौती देता है, जिसमें स्वयं परमेश्वर के लोग शामिल हैं। अब, इस कहानी को आगे बढ़ाते हुए, सबसे पहले भगवान ने यीशु मसीह के रक्त के माध्यम से लोगों को छुड़ाया और रिहा किया है।

उसने राज्य और पुजारियों का एक समुदाय बनाने और पुराने नियम की पूर्ति के लिए ऐसा किया है। निर्गमन में परमेश्वर का इरादा अब उसके नए लोगों के माध्यम से प्राप्त हुआ है, जो चर्च के यहूदियों और अन्यजातियों से बने हैं, जो उसके राज्य और पुजारी होंगे। अध्याय 1 और श्लोक 7 फिर भविष्य की आशा करें।

दानियेल अध्याय 7 और जकर्याह अध्याय 12 की भाषा का प्रयोग करते हुए यूहन्ना कहता है, देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और जिन्होंने उसे बेधा था वे हर एक आंख उसे देखेगी, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। यह हो. तथास्तु। इसलिए, परमेश्वर के राजा और पुजारी प्रत्याशा में रहते हैं और अपना जीवन जीते हैं।

वे उस दिन की प्रत्याशा में अपनी वफादार गवाही बनाए रखते हैं जब ईसा मसीह इतिहास को पूर्ण करने के लिए आएंगे, जब वह न्याय और मुक्ति लाएंगे। तो, पद 7 में मुद्दा यह है कि मसीह का आगमन निकट है। जैसा कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने वादा किया था, इतिहास को उसके निष्कर्ष तक पहुँचाने के लिए मसीह का आगमन निकट है।

इसलिए, इस राज्य और पुरोहिती को इसके आलोक में रहना चाहिए। मसीह के आगमन को इस नए लोगों, उनके पुजारियों के साम्राज्य को श्लोक 5 और 6 में पाए जाने वाले वफादार गवाह होने के अपने मिशन को पूरा करने के लिए प्रेरित और बनाए रखना चाहिए। यह सब श्लोक 8 में आधारित है, दो शीर्षकों में विशेष रूप से संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है ईश्वर

को। श्लोक 8 पर ध्यान दें। इसके बाद, श्लोक 7, दर्शाता है, पहले से ही उस भविष्य की भविष्यवाणी करता है जिसके प्रकाश में भगवान के राज्य और पुजारियों को रहना चाहिए।

श्लोक 8 यह सब दो शीर्षकों में स्वयं ईश्वर के चरित्र पर आधारित है। नंबर एक, मैं अल्फा और ओमेगा हूँ। दरअसल, तीन हैं।

अंतिम का शीर्षक सर्वशक्तिमान है, लेकिन मैं पहले दो पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। पहला यह कि, मैं अल्फा और ओमेगा हूँ। दूसरा, ईश्वर का वर्णन इस प्रकार किया गया है जो है, जो था और जो आने वाला है।

पहला, मैं अल्फा और ओमेगा हूँ। यह संभवतः अल्फा और ओमेगा वर्णमाला के पहले और आखिरी अक्षर हैं। आज भी, आप इसके बारे में सोचते हैं और आप ठीक-ठीक अनुमान लगा सकते हैं कि जॉन ने अमेरिकी वर्णमाला का उपयोग करने के लिए अल्फा और ओमेगा या ए और जेड को क्यों चुना।

अल्फा और ओमेगा शायद यहां एक कहावत की व्याख्या कर रहे हैं जो कोई पाता है, या यशायाह की पुराने नियम की किताब से भगवान पर लागू एक शीर्षक है। और वह शीर्षक है, पहला और आखिरी। यदि आप यशायाह अध्याय 41 और पद 4 पर वापस जाते हैं, तो दिलचस्प बात यह है कि यशायाह 40 का अधिकांश भाग, विशेष रूप से 40 से 66 तक, एक नए निर्गमन के संदर्भ में भगवान द्वारा अपने लोगों इसराइल के भविष्य के उद्धार का वर्णन करता है।

और हमने पहले ही जॉन को ईश्वर के लोगों के लिए एक्सोडस भाषा को लागू करते हुए देखा है, जैसे कि उन्हें मेमने के खून से छुटकारा दिलाया और उन्हें पुजारियों का राज्य बनाया, जो ईश्वर ने इज़राइल के लिए चाहा था, अब अपने नए लोगों, चर्च के लिए। लेकिन अब अध्याय में ध्यान दें, यशायाह अध्याय 41 और श्लोक 4, जिसने यह किया है और इसे शुरू से पीढ़ियों तक आगे बढ़ाया है, उनमें से पहले और आखिरी के साथ प्रभु, मैं वह हूँ। इसके अलावा, मुझे 44, 43 पद 10 पर जाने दें, आपको यह भी मिलेगा, लेकिन 44 पद 6, यह वही है जो भगवान कहते हैं, इस्राएल के राजा और मुक्तिदाता, सर्वशक्तिमान भगवान, मैं पहला हूँ और मैं अंतिम हूँ।

मेरे अलावा कोई भगवान नहीं है। अल्फा और ओमेगा, हम बाद में प्रकाशितवाक्य में देखेंगे, जॉन पहले और आखिरी शब्दों के साथ फिर से अल्फा और ओमेगा का उपयोग करेगा। अल्फा और ओमेगा तो मुझे लगता है कि यशायाह अध्याय 41, 4 और यशायाह 44, 6 को याद करने के लिए है, यह शीर्षक पुराने नियम, पहले और आखिरी में भगवान के लिए लागू होता है।

जाहिर है, जब कोई इसके बारे में सोचता है, तो यह संभवतः इतिहास के आरंभ और अंत में और बीच में हर जगह भगवान को संदर्भित करता है, यानी, यह एक शीर्षक है जो दर्शाता है कि भगवान पूरे इतिहास पर एक संप्रभु शासक है। लेकिन इसके बारे में कुछ और भी महत्वपूर्ण बात है। यशायाह 41, 43, और 44 के संदर्भ में जहां यह घटित होता है, यह अन्य मूर्तियों के मुकाबले ईश्वर के अनन्य ईश्वर होने के संदर्भ में घटित होता है।

और इसलिए, यह दावा करके कि ईश्वर अल्फ़ा और ओमेगा है, जो उदाहरण के लिए यशायाह 41 और 44 से पहला और आखिरी है, जॉन रोमन साम्राज्य के संदर्भ में दावा कर रहा है जहां आपके पास अन्य देवता हैं और सीज़र ध्यान आकर्षित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। और अधिकार तथा विशिष्ट पूजा और निष्ठा के लिए संघर्ष कर रहे हैं जो केवल ईश्वर से संबंधित है। अब इस शीर्षक का उपयोग करके, जॉन ने पुराने नियम से उस संदर्भ से एक पाठ लिया है जहां भगवान का पूर्ण अधिकार और संप्रभुता, हर दूसरे भगवान के खिलाफ उनकी पूर्ण विशिष्टता, पूजा करने का उनका विशेष अधिकार और अन्य देवताओं और मूर्तियों के सामने संप्रभुता है। अब जॉन इसका उपयोग एक बार फिर ईश्वर की विशेष संप्रभुता और रोम की सभी मूर्तियों पर ईश्वर की विशेष पूजा को प्रदर्शित करने के लिए करता है।

दूसरा शीर्षक है ईश्वर का वर्णन इस प्रकार किया गया है जो है, जो था और जो आ रहा है। जैसा कि अधिकांश ने महसूस किया है, यह संभवतः पुराने नियम के पाठ, निर्गमन अध्याय 3 श्लोक 14 में भगवान के शब्दों पर भी विस्तार करता है और आकर्षित करता है जब भगवान मूसा से कहते हैं कि वह मैं हूँ। लेकिन जो था और जो आ रहा है वह उस सूत्र में अनुपस्थित है।

हालाँकि, जब आप इन सबको जोड़ते हैं, तो संभवतः जब जॉन ईश्वर का वर्णन इस प्रकार करता है जो था, जो है, और जो आने वाला है, तो यह संभवतः एक सूत्र है जो ईश्वर की अनंतता को व्यक्त करता है। वह वही है जो इतिहास की शुरुआत में खड़ा है, वह वह है जो इतिहास के अंत और उससे भी आगे खड़ा है और वह वह है जो बीच में भी हर जगह खड़ा है। इसलिए, ईश्वर न केवल इतिहास की शुरुआत में निर्माता और प्रवर्तक के रूप में खड़ा है जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य के अध्याय 4 में देखेंगे, बल्कि वह इतिहास के बीच में भी खड़ा है, वह अपने लोगों के साथ है, और वह अपने लोगों के साथ मौजूद है .

तो, यह न केवल ईश्वर की उसकी रचना से परे उसकी सर्वोच्च स्थिति का एक शीर्षक है, बल्कि यह न केवल ईश्वर की अनंतता का संकेत देता है, जो सृष्टि से पहले खड़ा है, बल्कि वह जो सृष्टि में है, जो अपने लोगों के साथ मौजूद है, लेकिन फिर वह है जो आने वाला है. अर्थात्, ईश्वर ही वह है जो इतिहास को पूर्ण करेगा। ईश्वर का आगमन रहस्योद्घाटन के मुख्य विषयों में से एक है।

यह इतिहास को समाप्त करने के लिए ईश्वर के अपने पुत्र यीशु मसीह के माध्यम से आने की आशा करता है। तो पहले से ही ये शीर्षक रहस्योद्घाटन को पढ़ने के लिए महत्वपूर्ण विषयों और एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य का अनुमान लगाते हैं, क्योंकि भगवान ही वह है जो शुरुआत और अंत में है, अल्फ़ा और ओमेगा है, वह वही है जो था और आने वाला है, वह इतिहास पर संप्रभु है, वह अपने लोगों के साथ मौजूद है, वह इसे इसकी परिणति तक ले जाएगा, और इस बीच, किसी भी चीज़ या किसी और की पूजा करना केवल मूर्तिपूजा है, अल्फ़ा और ओमेगा को पहचानने में विफल होना, संप्रभु ईश्वर जो कि अनन्य भगवान है ब्रह्मांड और हमारी पूजा के योग्य एकमात्र। इसलिए, मुझे लगता है कि सात चर्च पहले से ही इसमें आराम पाने के लिए हैं, कि भगवान फिर से इतिहास की शुरुआत में खड़ा है, वह अब अपने सात चर्चों के साथ मौजूद है, और वह उन्हें भविष्य का आश्वासन देता है, कि वह चीजें लाएगा, वह इतिहास को उसकी परिणति तक ले जाएगा।

तो, शत्रुतापूर्ण दुनिया में उन्हें किस बात का डर है? उन्हें रोमन साम्राज्य से किस बात का डर है? वे किसी को या किसी अन्य चीज़ के प्रति अपनी निष्ठा क्यों देना चाहेंगे? और राजाओं और पुजारियों के रूप में, उनके पास शत्रुतापूर्ण रोमन दुनिया में अपने वफादार गवाह को बनाए रखने के लिए कोई अन्य विकल्प और हर प्रेरणा और कारण नहीं है जिसमें वे खुद को पाते हैं। इसलिए पहले से ही अध्याय 1:1-8 ने प्रकाशितवाक्य की शेष पुस्तक को पढ़ने के लिए एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है, हमें महत्वपूर्ण विषयों से परिचित कराया है, जिस तरह से भगवान को समझा जाना है, यीशु मसीह और आत्मा में भगवान की भूमिका क्या होगी रहस्योद्घाटन के बाकी हिस्सों में खेलें, और उस विशेष निष्ठा की याद दिलाएं जो वे भगवान और यीशु मसीह के प्रति देते हैं, और यह कि यीशु मसीह और भगवान ही हैं जो इतिहास को उनकी परिणति तक लाएंगे। छंद 9-20 फिर जॉन के यीशु मसीह के उद्घाटन या प्रारंभिक दर्शन की ओर बढ़ते हैं जो उसे प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 और 3 के सात चर्चों को संबोधित करने के लिए नियुक्त करने के लिए आता है। और जैसा कि हमने कहा, ये छंद जॉन के दृष्टिकोण को प्रमाणित करने का काम करते हैं। ऐसा करें, एक अर्थ में हम कह सकते हैं, यह अधिक संभावना बनाएं कि उसके पाठक बाकी किताब में जो कुछ भी कहते हैं उसे प्राप्त करें और स्वीकार करें और जॉन जिस तरह से कहता है उसी तरह से प्रतिक्रिया दें।

यह यह भी प्रदर्शित करता है, और हम देखेंगे, कि अध्याय 1 को वास्तव में अध्याय 2 और 3 से अलग नहीं किया जा सकता है। मुझे इस बिंदु पर भी एक और भ्रमण के रूप में कहना चाहिए, और हम इसे देखेंगे और इस पर ध्यान आकर्षित करेंगे अन्यत्र, यह ऐसी चीज़ है जो वास्तव में रहस्योद्घाटन की रूपरेखा तैयार करना और उसे विभाजित करना कठिन बना देती है। इसके इतने सारे हिस्से एक साथ जाल की तरह हैं। हम देखेंगे कि कुछ अनुभाग वास्तव में किसी चीज़ के पहले निष्कर्ष के रूप में कार्य करते हैं, और साथ ही जो बाद में आता है उसके परिचय के रूप में कार्य करते हैं।

और अक्सर आप पाते हैं, और फिर आपको बीच वाले खंड वाले खंड मिलेंगे। इसलिए, रहस्योद्घाटन की एक सटीक रूपरेखा तैयार करना बहुत कठिन है। इसलिए, मैं कोई विशिष्ट रूपरेखा नहीं मानने जा रहा हूं, लेकिन इस बिंदु पर, बस यह पहचानना है कि अध्याय 1 स्पष्ट रूप से एक परिचय प्रदान करता है, और स्पष्ट रूप से अध्याय 2 और 3 से संबंधित है, जहां जॉन तब करता है, के शब्दों के साथ पुनर्जीवित ईसा मसीह उन सात चर्चों को संबोधित करते हैं जिनका परिचय अध्याय 1 में दिया गया है। फिर से, मैं इस अध्याय के बारे में बस कुछ ही बातें कहना चाहता हूं।

सबसे पहले, इस खंड में, जॉन हमें पहले से ही याद दिलाते हैं कि वह लिखते हैं, ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं जो अपने पाठकों का समर्थन करता है, बल्कि ऐसे व्यक्ति के रूप में लिखता है जो वास्तव में उनकी दुर्दशा की पहचान करता है। ध्यान दें, और श्लोक 9 में विरोधाभासी वाक्यांश पर भी ध्यान दें। यहीं पर हम पाते हैं, मैं, जॉन, आपका भाई और साथी। इसलिए, जॉन एक ऐसे व्यक्ति के रूप में लिखते हैं जो वास्तव में अपने पाठकों की दुर्दशा को पहचानता है।

यह दिलचस्प है, कुछ ने सुझाव दिया है, मैं इसके बारे में निश्चित नहीं हूं, कुछ ने सुझाव दिया है कि जॉन, वास्तव में, वह निर्वासन में था जब पेटमोस ने फाँसी देने के बजाय, उसकी स्थिति के

बारे में कुछ दिखाया, कि वह अधिक विशिष्ट होता और समाज में धनी. अब वह यीशु मसीह में अपने विश्वास में अपने पीड़ित साथियों की पहचान करने के लिए झुकना चुनता है। हालाँकि, जो भी मामला हो, जॉन एक ऐसे व्यक्ति के रूप में लिखते हैं जो अपने पाठकों के साथ खड़ा नहीं होता है, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में लिखता है जो उनके साथ अपनी पहचान बनाता है।

और उस विरोधाभासी वाक्यांश पर ध्यान दें जब वह कहता है कि वह उनकी पीड़ा और साम्राज्य की पहचान करता है। यह उस प्रकार का संयोजन नहीं है जिसकी आप अपेक्षा करेंगे कि एक राज्य या शासन कष्ट लाएगा। लेकिन यह ठीक उसी प्रकार का राज्य है जिससे जॉन ईसाइयों को संबंधित के रूप में चित्रित करते हैं।

यह तथ्य कि वे परमेश्वर के शासन और राज्य से संबंधित हैं, उन्हें उस समय के दुष्ट साम्राज्य, रोमन साम्राज्य, के साथ संघर्ष में लाता है। और इसका अर्थ अनिवार्य रूप से कष्ट होगा। दरअसल, जॉन को भी यकीन है कि यीशु मसीह बिल्कुल इसी रास्ते पर गए थे।

यीशु मसीह राजा के रूप में आये, परन्तु उन्होंने आकर कष्ट उठाया और मर गये। और अब उनके अनुयायी भी उनका अनुसरण कर रहे हैं। हाँ, वे वर्तमान में परमेश्वर के राज्य और शासन का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसका हिस्सा हैं, लेकिन इसमें अभी भी परमेश्वर के लोगों की ओर से कष्ट और सहनशीलता शामिल है।

अगली चीज़ जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह वह दृष्टिकोण है जो जॉन के पास महान मसीह के बारे में है। अंत में, जॉन के पास महान ईसा मसीह का एक दर्शन है जो जॉन को मूल रूप से सात चर्चों को संबोधित करने के अपने अधिकार के साथ नियुक्त करने के लिए प्रकट होता है। और एक बार फिर, हम पाते हैं कि यीशु मसीह के बारे में जॉन की प्रारंभिक दृष्टि में, पुराने नियम के पाठ ही हावी हैं।

छंदों में दिया गया लगभग हर विवरण, विशेष रूप से 12 और उसके बाद, यीशु मसीह को दिया गया लगभग हर विवरण, वर्णनात्मक वाक्यांश, या शब्द जो मसीह के बारे में जॉन के दृष्टिकोण का वर्णन करता है, सीधे पुराने नियम से आता है। फिर, मुझे लगता है कि शायद यही चल रहा है, हाँ, जॉन के पास वास्तव में यह दृष्टिकोण है। उसने जो देखा उसका वर्णन कर रहा है।

लेकिन जॉन ने वास्तव में जो देखा था उसे स्पष्ट करने के लिए और अपने पाठकों को यह समझने में मदद करने के लिए कि जॉन ने वास्तव में क्या अनुभव किया था, पुराने नियम का सहारा लिया। इसलिए जॉन सभी प्रकार के पुराने नियम के ग्रंथों का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, वह सात स्वर्ण दीपस्तंभों का वर्णन करके प्रारंभ करता है, जो स्पष्ट रूप से दीपस्तंभों का वर्णन करते हैं, उदाहरण के लिए, निर्गमन अध्याय 5 में तम्बू के पवित्र स्थान में, और फिर 1 राजा अध्याय 7 में मंदिर में, और फिर जकर्याह अध्याय में दिलचस्प रूप से 4, जकर्याह के दर्शन में भविष्यवक्ताओं में से एक, जॉन की तरह, जकर्याह के स्वर्गीय मंदिर के दर्शन में, हम दीवट पाते हैं।

तो पहले से ही, जॉन न केवल पुराने नियम का चित्रण कर रहा है, बल्कि पहले से ही अध्याय 1 में, वह एक दृश्य, एक स्वर्गीय मंदिर का चित्र बना रहा है। वह स्वर्ग को समझ रहा है और वह यीशु

मसीह को समझता है, मैं यहां बहुत ही पुरोहिती शब्दों में सोचता हूं, जैसे कि अब वह स्वर्गीय मंदिर में रह रहा है या रह रहा है। इसका एक भाग पुराने नियम की मंदिर भाषा जैसे लैपस्टैंड का उपयोग करके संप्रेषित किया जाता है, जिसे बाद में जॉन हमारे लिए व्याख्या करेगा।

यह भी दिलचस्प है कि जॉन हमें बताता है कि ईसा मसीह वास्तव में इन दीवटों के बीच में हैं। बाद में श्लोक 20 में, जैसा कि हम पहले ही प्रकाशितवाक्य की कल्पना और प्रतीकवाद के बारे में बात करते हुए देख चुके हैं, जॉन दीवटों को सात चर्चों के रूप में वर्णित या पहचानने जा रहा है। वह पहले से ही इन दीवटों के बीच में मसीह का वर्णन करता है।

अर्थात्, मसीह को पहले से ही अपने लोगों के साथ मौजूद दर्शाया गया है। ताकि बाद में अध्याय 2 और 3 में चर्चों के सात संदेशों में, वह उन्हें ऐसी बातें बता सके, मुझे पता है कि आप किस दौर से गुज़र रहे हैं, मुझे पता है कि आप क्या अनुभव करते हैं, या मुझे पता है कि आपकी कमियाँ कहाँ हैं, मुझे पता है कि आपकी खामियाँ कहाँ हैं हैं। क्यों? क्योंकि मसीह को पहले से ही अपने लोगों से बहुत ऊपर किसी दूर के देवता के रूप में चित्रित नहीं किया गया है, जिसे इस बात की कोई चिंता नहीं है कि क्या हो रहा है, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो वास्तव में अपने चर्च के बीच में है और उसकी उपस्थिति में चलता है और इसलिए गहराई से जानता है कि वे क्या कर रहे हैं और उनमें क्या कमी है या वे क्या भुगत रहे हैं।

तो, एक तरह से, यह हमें अध्याय 2 और 3 के लिए तैयार कर रहा है जहां यीशु सात चर्चों और उनके सामने आने वाली समस्याओं का निदान करना शुरू करेंगे और आराम और चेतावनी दोनों प्रदान करेंगे। तो, दिलचस्प बात यह है कि चर्चों में दीवटों के बीच यीशु की उपस्थिति का क्या मतलब है, तो चर्चों के लिए यीशु की उपस्थिति का अलग-अलग मतलब होगा। जो लोग पीड़ित हैं, उनके लिए यीशु की उपस्थिति का अर्थ है आराम और प्रोत्साहन।

जो लोग समझौता कर रहे हैं या आत्मसंतुष्ट हो गए हैं, उनके लिए यीशु की उपस्थिति का मतलब कुछ और है। इसका मतलब है कि वह जज बनकर आते हैं. याद रखें, यीशु को उसके मुँह से तलवार निकलते हुए चित्रित किया गया है, जो पुराने नियम की एक और छवि है।

इसलिए, जो लोग समझौतावादी और आत्मसंतुष्ट हैं, यीशु उनके पास एक न्यायाधीश के रूप में आते हैं, जिनके मुँह से तलवार निकलती है। यीशु को आगे मनुष्य के पुत्र के रूप में वर्णित किया गया है, भाषा डैनियल अध्याय 7 से ली गई है, जहां चार पशु-प्रकार के राज्यों के बाद, डैनियल ने मनुष्य के पुत्र को देखा। जानवर के साथ तुलना करें, अब आपके पास एक मनुष्य का पुत्र है, एक मानव जैसा व्यक्ति जो अब प्राप्त करता है, जो निर्दोष है और एक राज्य प्राप्त करता है।

और अब यूहन्ना यीशु को दानिय्येल अध्याय 7 में मनुष्य के उस महान पुत्र के रूप में देखता है। पहले ही, यीशु को उसका राज्य प्राप्त हो चुका है। पहले से ही, यीशु ने अपनी मृत्यु के माध्यम से अपने शासन का उद्घाटन किया है, और अपने पुनरुत्थान और उत्थान के माध्यम से, मनुष्य के पुत्र को पहले ही दोषी ठहराया जा चुका है और उसके राजसी शासन में प्रवेश किया है। और अब वह अध्याय 2 और 3 में अपने चर्चों का निरीक्षण करेगा। हालाँकि, मनुष्य के पुत्र के इस वर्णन की

एक दिलचस्प विशेषता श्लोक 14 में है, जहाँ वह मनुष्य के पुत्र का वर्णन करता है जिसका सिर और बाल ऊन की तरह सफेद थे और बर्फ की तरह सफेद.

यदि आप डैनियल 7 पर वापस जाते हैं, तो वास्तव में दो आकृतियाँ हैं, उनमें से एक मनुष्य का पुत्र है, और दूसरा स्वयं ईश्वर है, जो सिंहासन पर बैठा हुआ प्राचीनतम है। और दानियेल 7 में जो दिलचस्प है, वह सिंहासन पर प्राचीन काल का व्यक्ति है जिसे सफेद बालों, ऊन के समान सफेद और बर्फ के समान सफेद के साथ वर्णित किया गया है। अब वह भाषा मनुष्य के पुत्र के रूप में यीशु पर लागू होती है।

और हम इसे पूरे प्रकाशितवाक्य में देखेंगे जहां आपको पुराने नियम की भाषा मिलेगी जो ईश्वर पर लागू होती थी, अब यीशु मसीह पर लागू होती है। क्योंकि पहले से ही, मुझे लगता है कि जॉन कह रहा है कि मनुष्य का यह महान पुत्र कोई और नहीं बल्कि स्वयं ईश्वर है। यह ईसा मसीह के ईश्वरत्व के लिए सबसे मजबूत कथनों में से एक है जो पूरी बाइबिल और विशेष रूप से नए नियम में पाया जाता है।

जहाँ आपने यीशु का उस भाषा में वर्णन किया है जो स्वयं ईश्वर के लिए आरक्षित है। खासकर जब आप उस रहस्योद्घाटन को जोड़ते हैं, तो रहस्योद्घाटन जो कर रहा है उसका एक हिस्सा यह पूछना है कि वास्तव में नियंत्रण में कौन है? पूजा करना और निष्ठा देना या उस सिंहासन के अलावा जो स्वयं परमेश्वर का है, कोई अन्य सिंहासन रखना मूर्तिपूजा है। याद रखें, वह अल्फ़ा और ओमेगा है।

उसके सामने कोई दूसरा भगवान नहीं हो सकता. रहस्योद्घाटन उस विशिष्ट पूजा के बारे में एक पुस्तक है जो केवल ईश्वर की है। फिर आप जॉन को पुराने नियम के पाठों को लागू करने, हर दूसरे ईश्वर के मुकाबले ईश्वर की विशिष्टता का जश्न मनाने, जो कि मूर्तिपूजा है, और अब उसे यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर कैसे लागू कर सकते हैं? जॉन सुझाव देते प्रतीत होते हैं कि मनुष्य का पुत्र एक अद्वितीय व्यक्ति है।

वह कोई और नहीं बल्कि स्वयं भगवान हैं। इसके अलावा, यदि आप आगे बढ़ते हैं और श्लोक 17 पढ़ते हैं, जब जॉन ने मनुष्य के पुत्र को देखा, तो मैंने उसे देखा, वह उसके पैरों पर गिर गया, जो सर्वनाशी भाषा में पाई जाने वाली एक विशिष्ट प्रतिक्रिया है। जब कोई द्रष्टा कोई दर्शन देखता है, तो वे कमज़ोर हो जाते हैं या अपने पैरों पर गिर जाते हैं, और जॉन उसके पैरों पर गिर जाता है।

तब उस मनुष्य के सन्तान ने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखकर कहा, मत डर। मैं पहला और आखिरी हूँ. खैर, वह फिर से भाषा है।

यहां अध्याय 1 श्लोक 8 में अल्फ़ा और ओमेगा से मिलती जुलती भाषा है। अब हमें एक बार फिर वह भाषा मिलती है जिसे अध्याय 1 श्लोक 8 में ईश्वर पर लागू किया गया था, अब यीशु मसीह पर लागू किया गया है। इसके अलावा, हम पहले ही देख चुके हैं कि इस भाषा का संदर्भ यशायाह अध्याय 41, 43, और 44 है, जहां पहली और आखिरी भाषा न केवल शाश्वत ईश्वर का जिक्र करती थी, हालांकि ऐसा हुआ था, कि वह इतिहास की शुरुआत और अंत में था। . वह सारी सृष्टि और

पूरे इतिहास पर प्रभुत्व रखता है, लेकिन इसका उपयोग अन्य सभी देवताओं, जो कि मूर्तियाँ थे, के मुकाबले ईश्वर को अनन्य ईश्वर के रूप में संदर्भित करने के लिए किया गया था।

अब वह भाषा यीशु मसीह पर लागू होती है। और इस भाषा को परमेश्वर के अलावा किसी और पर लागू करना पूरी तरह से मूर्तिपूजा होगी। फिर भी जॉन इसे यीशु मसीह पर लागू करता है, यह सुझाव देता है कि यीशु मसीह ईश्वर सृजन विभाजन के ईश्वर पक्ष में ईश्वर के साथ खड़ा है।

अथवा इतिहास के आरंभ और अंत में जो ईश्वर खड़ा है वह भी ईसा मसीह ही है। यीशु इतिहास पर सर्वोच्च प्रभु हैं। अब उसके पुनरुत्थान के कारण, उसके पास मृत्यु की चाबियाँ हैं।

इसलिए, प्रकाशितवाक्य के शेष भाग में, जब हम सात चर्चों के संदेश में अध्याय 2 और 3 पढ़ते हैं, तो हम भगवान के लोगों को पीड़ित पाते हैं या सोचते हैं कि क्या उन्हें पीड़ित होना चाहिए, हम पाते हैं कि दो लोग वफादार गवाह के कारण उत्पीड़न सह रहे हैं, लेकिन अन्य सोचो समझौता करना ठीक है। पहले से ही रहस्योद्घाटन तो अध्याय 1 एक संदेश प्रदान करता है। मनुष्य का यह पुत्र ब्रह्मांड का सर्वप्रभु प्रभु है।

वह सारी सृष्टि पर कायम है और इसके अलावा, अपने पुनरुत्थान के कारण, उसने अब मृत्यु पर विजय पा ली है। अब उसके पास मौत की चाबियाँ हैं। तो, पाठकों को किस बात का डर है? जो लोग उत्पीड़न सह रहे हैं, उन्हें रोम या किसी और के हाथों डरने की क्या ज़रूरत है? और जो लोग समझौता कर रहे हैं उनके पास यीशु मसीह के लिए खड़े होने के लिए हर साधन और हर कारण है, चाहे परिणाम कुछ भी हो।

क्योंकि यीशु ने पहले ही मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है। तो, अगर उनकी वफादार गवाही के परिणामस्वरूप मृत्यु के बिंदु पर उत्पीड़न होता है, जैसा कि कम से कम एक व्यक्ति के साथ हुआ, तो उन्हें किस बात का डर है? वास्तव में, उसके पुनरुत्थान का मतलब न केवल मृत्यु पर विजय पाना है, बल्कि वह वह है जो जीवन देता है। इसलिए बाद में रहस्योद्घाटन के अध्याय 20 और अध्याय 21 और 22 में, हम उस पुस्तक को पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप एक नई रचना हुई जहां भगवान अब अंततः अपने लोगों को जीवन देकर उनकी पुष्टि करते हैं।

तो, अगर उनकी वफादार गवाही से उनकी जान चली जाए तो उन्हें किस बात का डर है? तब चर्च में भगवान की उपस्थिति या तो भगवान के लोगों को उनकी आध्यात्मिक स्थिति के आधार पर आराम का संदेश या चेतावनी का संदेश प्रदान करेगी। लेकिन अब यीशु एशिया माइनर में मौजूद सात चर्चों की स्थिति को संबोधित करने और उसका मूल्यांकन करने के लिए जॉन के माध्यम से संबोधित करने के लिए तैयार हैं। इससे पहले कि हम ऐसा करें, इस खंड में जिन दो अन्य बिंदुओं पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, वे दो अतिरिक्त विशेषताएं हैं।

उनमें से एक श्लोक 19 में पाया जाता है जहां यीशु जॉन से बात करते हैं और उसे लिखने का आदेश देते हैं, पूरे प्रकाशितवाक्य में यह कई बार दिलचस्प है, जॉन को वह लिखने का आदेश दिया गया है जो उसने देखा था, इसलिए लिखो, यह अध्याय एक श्लोक 19 है, इसलिए जो तुम्हारे पास है उसे लिखो देखा या जो देखा, अभी क्या है और बाद में क्या होने वाला है। इस तीन गुना



वाक्यांश की व्याख्या करना बहुत लोकप्रिय रहा है, आपने क्या देखा है, क्या है, और क्या होने वाला है या आपके अनुवाद के आधार पर क्या आने वाला है। इसे रहस्योद्घाटन की संपूर्ण पुस्तक की एक मोटी रूपरेखा के रूप में देखना आम बात है, जहां इनमें से प्रत्येक, आपने क्या देखा है, क्या है और क्या आने वाला है, रहस्योद्घाटन के कुछ खंडों के अनुरूप है।

सबसे आम अध्याय एक यह है कि जॉन ने क्या देखा है, और अध्याय दो और तीन क्या है, यह जॉन और उसके पाठकों का वर्तमान दिन है। और फिर अध्याय चार से 22 तक क्या आने वाला है, यह सब भविष्य है जो अभी घटित होना बाकी है। और अक्सर यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक को पढ़ने के कुछ निश्चित तरीकों से जुड़ा होता है।

इसलिए, अध्याय एक, श्लोक 19 को अक्सर रहस्योद्घाटन की विभिन्न घटनाओं के घटित होने के समय की एक मोटी अस्थायी रूपरेखा के रूप में लिया जाता है। एकमात्र कठिनाई यह है कि सबसे पहले, संक्षेप में कहें तो यह काम नहीं करता है, यह प्रकाशितवाक्य के पाठ में वास्तव में जो मिलता है उसमें फिट नहीं बैठता है। उदाहरण के लिए, विशेष रूप से अध्याय दो और तीन में, अध्याय एक, अध्याय एक से शुरू होकर, अध्याय एक और श्लोक सात में जॉन पहले से ही भविष्य की ओर बढ़ता है, पहले से ही भविष्य की आशा करता है।

और इसके अलावा, अध्याय दो और तीन में चर्चों के सात संदेश, हाँ, जॉन के वर्तमान समय में पहली शताब्दी के सात चर्चों के बारे में हैं। वह उन्हें उनकी स्थिति में संबोधित कर रहा है और उनकी वर्तमान स्थिति को समझने की कोशिश कर रहा है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि जब हम सात चर्चों को देखते हैं, तो वे सभी भविष्य के वादे के साथ समाप्त होते हैं।

वे सभी चर्च से एक वादे के साथ समाप्त होते हैं कि अगर वह जीत हासिल करता है तो क्या होगा, और अगर वह जीत जाता है और अपने वफादार गवाह को बरकरार रखता है तो क्या होगा। सभी संदेश भविष्य के वादे के साथ समाप्त होते हैं। और फिर अध्याय चार से 22 तक, हम पहले ही देख चुके हैं कि अध्याय 12 एक पिछली घटना को संदर्भित करता है, वह है यीशु मसीह की मृत्यु।

और मैं यह तर्क देने जा रहा हूँ कि पाठक के दिन के साथ-साथ भविष्य में होने वाली वर्तमान घटनाओं के संदर्भ में अध्याय 4 से 22 चर्चों तक। इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि इसे एक रूपरेखा के रूप में उपयोग करना बहुत सीमित है जो रहस्योद्घाटन के प्रतिबंधित खंडों से जुड़ा है। इसके बजाय, एक और संभावना यह है कि क्या यह संभव है कि जब जॉन से कहा जाए, जो तुमने देखा है उसे लिखो, मुझे लगता है कि वास्तव में इसका अनुवाद किया जा सकता है, जो तुम देखते हो उसे लिखो।

वह पूरी किताब का संदर्भ है। पूरी किताब वही है जो वह देखता है। फिर अगले दो तत्व, क्या है और क्या आने वाला है, बस अधिक विस्तार से वर्णन करें कि पुस्तक की सामग्री के साथ उसे क्या देखना है।

और यह निश्चित रूप से समझ में आएगा। जो देखो वही लिखो, वही पूरी किताब है। और पूरी किताब में जो कुछ है, दोनों शामिल हैं, जो उनके वर्तमान का बोध कराता है, लेकिन यह भी बताता है कि क्या आने वाला है।

इसे देखने का एक और तरीका यह भी है कि, आपने जो देखा है, जो है, और जो आने वाला है, वह बस भगवान के इस्तेमाल किए गए शीर्षक को दर्शाता है, जो है, जो था, और जो आने वाला है। या वह जो था, वह जो है, और वह जो आने वाला है। यानी पूरी किताब में फिर से अतीत, वर्तमान और भविष्य का बोध होता है।

इनमें से किसी एक का मुद्दा यह है कि फिर से, रहस्योद्घाटन में पूरी किताब में अतीत, वर्तमान और भविष्य, विशेष रूप से वर्तमान और भविष्य के संदर्भ शामिल होंगे। और हम इस वाक्यांश को रहस्योद्घाटन के विशिष्ट, अलग-अलग खंडों तक सीमित नहीं कर सकते। लेकिन पूरा पूरा वाक्यांश, चाहे हम इसे जिस भी रूप में लें, संभवतः पूरी किताब के चरित्र का वर्णन करता है।

दूसरी बात जो मैं बहुत संक्षेप में उल्लेख करना चाहता हूं वह श्लोक 20 में है। मैं इस पर बहुत संक्षेप में चर्चा करूंगा क्योंकि हम पहले ही इसके बारे में बात कर चुके हैं। श्लोक 20, एक अर्थ में, एक मॉडल प्रदान करता है, चाहे जॉन ने ऐसा ही इरादा किया हो।

श्लोक 20 प्रकाशितवाक्य की शेष पुस्तक की व्याख्या के लिए एक मॉडल प्रदान करता है। और हम देखते हैं कि यह वास्तव में केवल दो स्थानों में से एक है जहां जॉन ने वास्तव में उसके लिए कुछ व्याख्या की है। दूसरा अध्याय 17 है।

लेकिन यहाँ, पुनर्जीवित मसीह जॉन से बात कर रहे हैं और जॉन को संबोधित करते हुए उसे बताते हैं कि स्वर्गदूत, सात सितारे सात चर्चों के स्वर्गदूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और सात दीवट वास्तव में प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 और अध्याय 3 के सात चर्चों का प्रतिनिधित्व या प्रतीक करते हैं। हम इसके महत्व के बारे में थोड़ी बात करेंगे। दूसरे शब्दों में, हम वास्तविक सर्वनाशकारी शैली में देखते हैं, कि हमें वास्तविक व्यक्तियों और घटनाओं का संदर्भ देने वाले प्रतीक मिलते हैं, लेकिन उन व्यक्तियों और घटनाओं का वर्णन शाब्दिक रूप से नहीं, बल्कि रूपक के रूप में किया जाता है।

और इसी तरह हमें प्रकाशितवाक्य की बाकी किताब की व्याख्या करनी चाहिए। अब, अगले भाग में, हम शुरू करेंगे, अब जब जॉन को पुनर्जीवित मसीह द्वारा नियुक्त किया गया है, अब जब उसने हमें अपनी पुस्तक के चरित्र के बारे में थोड़ा बताया है और इसे कैसे पढ़ा जाना है, तो हम शुरू करेंगे और हम यह जांचने के लिए तैयार हैं कि मसीह एशिया माइनर में सात चर्चों को कैसे संबोधित करते हैं और उनका मूल्यांकन कैसे करते हैं और तब चर्चों को कैसे प्रतिक्रिया देनी थी और प्रकाशितवाक्य की बाकी किताब को पढ़ना था।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन और रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर उनका पाठ्यक्रम है। यह रहस्योद्घाटन अध्याय एक पर सत्र 4 है।